**एक घोर अंधेरी आंखां नहीं, और ठौर नहीं बुध मन।**
**विखम जल ऐसे मिने, पिउ आए मुझ कारन।। १० ।।**

एक तो घोर अज्ञानता का भरा संसार है और दूसरी मैं नासमझ थी (आंखें नहीं थीं)। ऐसे भयंकर डरावने संसार में प्रीतम मेरे वास्ते आए थे।

**मांहें भभूके आग के, खाना अमल जेहेर अति जोर।**
**पिउ पुकारे कई विध, मैं उठी ना अंग मरोर।। ११ ।।**

इस संसार में बड़ी-बड़ी माया की चाहनाओं की अग्नि जल रही है। माया का ही जहरीला नशा खाना पड़ता है। इसमें से निकालने के लिए प्रीतम ने कई तरह से सावधान किया, पर मैं माया की खुमारी को दूर न कर सकी।

**पिउ मेरा मुझ वास्ते, आए ऐसे में आप।**
**कई बिध जगाई मोहे, मैं कर ना सकी मिलाप।। १२ ।।**

ऐसे संसार में मेरे प्रीतम मेरे वास्ते आए और उन्होंने कई तरह से मुझे जगाया। पर मैं उनसे मिल न सकी।

**अब कहा करूं कहां जाऊं, टूट गई मेरी आस।**
**कहां वतन कौन बतावे, पिउ ना देखूं पास।। १३ ।।**

अब क्या करूं? कहां जाऊं? मेरी आशा टूट गई है। अब घर कहां है, कौन बताएगा? बताने वाले प्रीतम मेरे पास नहीं हैं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। १८२ ।।

**पुकार चले मेरे पिउजी, मैं तो नींदई में उरझीए।**
**अब ढूंढे मेरा जीव रे, सो सजन अब कित पाइए।। १ ।।**

मेरे प्रीतम पुकार-पुकार के चले गए। मैं माया की नींद में ही पड़ी रही। अब मेरा जीव प्रीतम को ढूंढता है, लेकिन अब वह कहां मिलें?

**सई रे पिउ की बातें मैं कैसे कहूं, मोसों आए कियो मिलाप।**
**मेरे वास्ते माया मिने, क्यों कर डार्‌या आप।। २ ।।**

हे बहन ! मैं प्रीतम की बातें कैसे कहूं? वह माया के बीच में मेरे वास्ते आए और मुझे मिले।

**आए वतन से पिउ अपना, देखाए के चले राह।**
**आधा गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाह।। ३ ।।**

प्रीतम घर से आए और घर का रास्ता बताकर चले गए। यदि उनकी थोड़ी भी कृपा याद आती तो तभी मेरा जीव निकल जाता।

**साहेब चले वतन को, केहे केहे बोहोतक बोल।**
**धिक धिक पड़ो मेरे जीव को, जिन देख्या न आंखां खोल।। ४ ।।**

बहुत वचन कहकर साहब (स्वामी) घर चले गए। धिक्कार है मेरे जीव को, जिसने आंखें खोलकर पहचानां नहीं।

Nijanand App

**सई रे अनेक भांत मोसों कही, मोहे सालत हैं सो बैन रे।**
**सो भी कह्या आंझू आन के, पर मैं पलक न खोले नैन रे।।५ ।।**

हे बहन ! मुझसे अनेक प्रकार की बातें कीं। वह वचन मुझे चुभते हैं। वह वचन भी मुझे रो-रोकर कहा, परन्तु मैं सावचेत (सावधान) न हुई।

**आंखां पानी भर के, हाथ पकड़ किया सोर।**
**आग परो मेरे जीव को, जाको अजहूं एही मरोर।। ६ ।।**

धनी ने आंखों में आंसू भरकर हाथ पकड़कर पुकारा। धिक्कार है मेरे जीव को, जिसे अभी भी माया का अहंकार चढ़ा है।

**सई रे अब मैं कहा करूं, मेरा हाल होसी बिध किन।**
**वतन बैठ सैयन में, क्यों कर करूं रोसन।।७ ।।**

हे बहन ! अब मैं क्या करूं? मेरा परमधाम में क्या हाल होगा? जब सुन्दरसाथ में बैठकर बातें होंगी तो मैं अपनी क्या बात कहूंगी?

**अब सुनो रे तुम सैंयां, कहूं सो बीतक बात।**
**पानी तो पिउजी ले चले, अब तलफूं मछली न्यात।। ८ ।।**

हे सुन्दरसाथजी! सुनो, मैं अपनी हकीकत बताती हूं कि परमधाम की वाणी तो अब धनी ले गए हैं। अब बिना उस वाणी के मछली की तरह तड़प रही हूं।

**कर कर सोर जो वल्लभा, फिरे जो आप वतन।**
**चले जो मेरे देखते, केहे केहे अनेक वचन।। ९ ।।**

मेरे प्राण वल्लभ तरह-तरह से वाणी सुनाकर घर चले गए और मुझे तरह-तरह के वचन कहते रहे। मैं देखती रही और वह चले गए।

**दुलहा मेरा चल गया, मेरी वले न जुबां यों।**
**पल पल वचन पिउ के, मोहे लगे कटारी ज्यों।। १० ।।**

मेरी जबान से यह शब्द ही नहीं निकलते कि मेरे धनी चले गए। मुझे पल-पल उनके वचन याद आते हैं जो कटार की तरह मुझे काट रहे हैं।

**आग पड़ो तिन देसड़े, जित पिउ की नहीं पेहेचान।**
**तो भी सुध मोहे न भई, जो हुई एती हान।। ११ ।।**

ऐसे मेरे शरीर (देसड़े) को आग लग जाए जहां (जिसको) पिया की पहचान नहीं है। इतनी बड़ी हानि होने पर भी मुझे होश नहीं आया।

**काट जीव टुकड़े करूं, मांहें भरूं मिरच लोंन।**
**ए दरद पिया इन भांत का, अब ए मेटे कौन।। १२ ।।**

अब मैं अपने जीव को काटकर टुकड़े कर दूं और उसमें नमक और मिर्च भर दूं। मेरे पिया के बिछुड़ने का दर्द ऐसा है कि अब इसे कौन मिटाएगा?

Nijanand App

**आग लगी झाला उठियां, जीवरा जले रे मांहें।**
**तलफ तलफ मैं तलफूं, पर ठंडक न दारू क्यांहें।। १३ ।।**

मेरे तन में विरह की अग्नि जल रही है, जिनकी लपटों में अन्दर ही अन्दर जीव जल रहा है। मैं तड़प रही हूं, किन्तु कहीं भी ठंडक व दवाई (उनके दर्शन और चर्चा) नहीं मिलती।

**दुलहासों जो मैं करी, ऐसी करे न दूजा कोए।**
**विलख विलख पिउजी चले, पर मैं मूंदी आंखां दोए।। १४ ।।**

मैंने अपने प्रीतम से जो व्यवहार किया है, ऐसा दूसरा कोई नहीं करता। धनी बिलख-बिलखकर समझाकर चले गए, परन्तु मेरी दोनों आंखें बंद रहीं।

**अब क्यों करूंगी मैं बातड़ी, सामी क्यों उठाऊंगी मोंह।**
**मेरे हाथ ऐसी भई, खलड़ी उतारूं सिर नोंह।। १५ ।।**

मैं अपने प्रीतम के सामने मुंह ऊंचा करके कैसे बात करूंगी। मेरे हाथ से इतना बुरा हुआ है। अब दिल चाहता है कि नाखून से लेकर सिर तक अपनी चमड़ी उधेड़ दूं।

**काटूं तन तरवारसों, भूक करूं हड्डियां तोर।**
**खलड़ी उतारूं पेहेले उलटी, जीव काढूं यों जोर।। १६ ।।**

अपने तन को तलवार से काटूं, हड्डियों को तोड़कर चूरा बनाऊं, पहले उलटी खाल उतारूं। इस तरह से पापी जीव को निकालकर बाहर फेंकूं।

**तरवार भाले कटारियां, मोहे काट करी टूक टूक।**
**मेरे अंग हुए मुझे दुस्मन, जीव करे मिने कूक।। १७ ।।**

तलवार, भाले और कटार से मैं अपने अंगों को टुकड़े-टुकड़े करूं। मेरे ही अंग मेरे दुश्मन हो गए हैं, जिनके अन्दर फंसा जीव चिल्ला रहा है।

**धाम धनी पेहेचान के, सीधी बात न करी सनमुख।**
**कबूं दिल धनी का मैं न रख्या, अब क्यों सहूंगी ए दुख।। १८ ।।**

धाम-धनी को पहचानकर उनके निकट बैठकर मैंने कभी बातें नहीं कीं। मैंने कभी भी धनी की चाही बात पूरी नहीं की। अब यह दुःख कैसे सहन होगा?

**दरद मीठा मेरे पिउ का, ए जो आग दई मुझे तब।**
**अति सुख पाया मैं इनमें, सो मैं छोड़ ना सकों अब।। १९ ।।**

पहले भी मुझे जुदाई का दुःख दिया था (१७०३ से १७१२ तक)। वह मुझे अब अच्छा लगता है और मैंने उसमें सुख का अनुभव किया, जिसे अब मैं कभी भूल नहीं सकती।

**एता सुख तेरे सूल में, तो विलास होसी कैसा सुख।**
**पर मैं न पेहेचाने पिउ को, मोहे मारत हैं वे दुख।। २० ।।**

हे धनी ! आपके विरह में जब इतना सुख है तो विलास में कितना सुख होगा? पर मैंने अपने प्रीतम की पहचान नहीं की, मुझे वही दुःख मार रहा है।

Nijanand App

**सब अंग मेरे टुकड़े करूं, भूक करूं देह जिउ।**
**सो वार डारूं तुम दिस पर, इत सेवा हुई कहां पिउ।। २१ ।।**

अब मैं चाहती हूं कि अपने तन के टुकड़े कर डालूं और जीव तथा शरीर का चूरा बना दूं और आपके चरणों में न्यौछावर कर दूं। मुझसे धनी की सेवा क्यों नहीं हुई?

**हड्डियां जारूं आग में, मांहें मांस डारूं सिर।**
**ए भूली दुख क्योंए न मिटे, ए समया न आवे फिर।। २२ ।।**

हड्डियों को आग में जलाऊं। आग में तन का मांस और सिर डाल दूं। फिर भी ऐसी भूल करने का दुःख नहीं मिटता। गया समय हाथ नहीं आता।

**जरा जरा मेरे जीव का, विरहा तेरा करत।**
**चरनें ल्यो इंद्रावती, पेहेले जगाए के इत।। २३ ।।**

हे धनी ! अब मेरे तन का रोम-रोम (जर्रा-जर्रा) आपके विरह में दुःखी है।-इसलिए यहां पहले जागृत करके अपने चरणों में ले लो।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। २०५ ।।

## चौपाई प्रगटी है

**एक लवो याद आवे सही, तो जीव रहे क्यों काया ग्रही।**
**अब सुनियो साथ कहूं विचार, भूले आपन समें निरधार।। १ ।।**

हे साथजी! धनी के वचनों में से थोड़ा सा भी याद आ जाए, तो जीव इस शरीर को कैसे पकड़कर रखेगा? हे साथजी! मेरे विचार में हमसे अवश्य ही भूल हुई है।

**गयो अवसर फेर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ।**
**तब जो वासना बाई रतन, लीलबाई के उदर उतपन।। २ ।।**

मौका जो हाथ से गया था फिर मिल गया है। अपने प्राणनाथ ने हमको सावचेत (सतर्क) कर दिया है। उस समय जो बिहारीजी, रतनबाई की वासना है और लीलबाई उनकी माताश्री हैं।

**श्री देवचन्दजी पिता परवान, देख के आवेस दियो निरवान।**
**वचन धनी के कहे निरधार, आवेस पिउजी को है अपार।। ३ ।।**

श्री देवचन्द्रजी उनके पिताश्री हैं। उन्होंने परखकर और विचारकर मुझे अपना आवेश दिया और तारतम दिया। धनी के कहे हुए वचनों के अनुसार पियाजी के आवेश अपार हैं।

**इन बानिऐं ब्रह्मांड जो गले, तो वासना वानी से क्यों पीछी टले।**
**वासना कारन बांधे बंध, कई भांते अनेक सनंध।। ४ ।।**

इस वाणी से तो सारे ब्रह्माण्ड को एक रस करके अखण्ड करना है। आत्माएं वाणी से पीछे क्यों रहेंगी? वासनाओं के वास्ते धनी ने तरह-तरह के उपाय किए। जगाने के लिए बन्धन बांधे।

**ए वानी कही मेरे धनी, आगे कृपा होसी घनी।**
**हरखें साथ जागसे एह, रेहेसे नहीं कोई संदेह।। ५ ।।**

यह वाणी मेरे धनी ने कही है। आगे बड़ी भारी कृपा होगी। बड़ी खुशी से साथ जागेंगे। सन्देह बाकी नहीं रह जाएंगे।

Nijanand App